शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

लघुकथा में अभिव्यक्त विघटित मानवीय मूल्य

जयश्री झांकल (शोधार्थी)
डॉ. शालिनी मूलचन्दानी (निर्देशक)
डूंगर कॉलेज
बीकानेर, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

आधुनिक समय में बढ़ते वैज्ञानिक विकास, औद्योगिकरण, पूंजीवाद, पाश्चात्य प्रभाव व महानगरीय जीवन की चकाचौंध में भारतीय समाज व संस्कृति का स्वरूप बदलता जा रहा है। मनुष्य में व्यक्तिवादिता की धारणा प्रबल होती जा रही है, जिसके परिणाम स्वरूप भावनात्मक रूप से जुड़े रिश्ते अपनी गरिमा खोते जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में भारतीय समाज पतनोन्मुख होता जा रहा है। अति-बौद्धिकता व स्वार्थपरता से घिरा मानव आधुनिकता की आड़ में अपराधों को जन्म दे रहा है। आधुनिक मनुष्य तन से तो आधुनिक होने का दिखावा कर रहा है, परन्तु मानसिक रूप से वह पिछड़-सा गया है। मानव जीवन में आये इन बदलावों को अभिव्यक्त करने के लिए ही वर्तमान लघुकथा प्रयासरत है। वर्तमान यथार्थ जीवन में घटित छोटी से छोटी विसंगति का बोध कराना लघुकथा का प्रमुख उद्देश्य है और वह अपने इस उद्देश्य में सफल भी हो रही है। लघुकथा के द्वारा मनुष्य के मन व मस्तिष्क को जागृत करने की शक्ति के आधार पर ही उसे 'संकटबोध की घोषणा' के रूप में अभिव्यक्त किया है। आधुनिकता का उद्देश्य 'मानवोत्थान' ही है। जिसके अन्तर्गत प्राचीन परम्पराओं का भी मान रखा गया है। आधुनिकता के नकारात्मक स्वरूप को जीवन में उतारकर भारतीय समाज और संस्कृति में विपरीत मूल्यों को अपनाने के विरोध स्वरूप ही वर्तमान लघुकथाओं का सृजन हो रहा है। प्रस्तुत शोध-पत्र में लघुकथा में अभिव्यक्त विघटित मानवीय मूल्यों पर विचार किया गया है।

आधुनिकता से आशय

आधुनिक काल, अन्य कालों की अपेक्षा अधिक नवीन, परिष्कृत व जागरूकता का काल कहा जाता है। आधुनिक समय की आधुनिकता विज्ञान की प्रगति, तकनीकी उन्नति व औद्योगिकरण के बढ़ते हुए वर्चस्व के आधार पर आंकी जा रही है। आधुनिकता का मनुष्य जीवन में क्या योगदान है, इसे यथार्थ परिस्थितियों के अनुरूप ही जाना जा सकता है। आधुनिकता निरन्तर गतिशील प्रक्रिया है, जिसे शब्दों के बांध में रोक पाना असंभव कार्य है। यह एक अनुभवजन्य विचारधारा कही जा सकती है, जिसे कई विद्वानों ने अपने अनुभवों के आधार पर परिभाषित करने का प्रयास किया है। शिवप्रसाद सिंह की आधुनिकता के लिए दी गई परिभाषा के अनुसार "आधुनिकतावादी दृष्टि पुरातन को भी नए संदर्भों में देखकर उसका आंकलन करती है।" यानि आधुनिकता अपने अतीत को ही परिष्कृत करती है, उसमें से निष्क्रिय तत्वों को निकालती है और उसे नए सिरे से प्रवाहित होने का अवसर प्रदान करती है। अतीत को भुलाना आधुनिकता नहीं है। आधुनिकता की दृष्टि को पाश्चात्य संस्कृति की देन कहा गया है, परन्तु ऐसा नहीं है। हर सभ्यता और संस्कृति की नवीनता यथार्थ

परिस्थितियों पर निर्भर करती है, जो कि सभी देशों में समान नहीं होती। 'आधुनिकतावाद' का आंदोलन अवश्य पश्चिम की देन था। जिसकी कुछ लहरें भारत में भी आयी। भारत में आधुनिकता के जिस स्वरूप को ग्रहण किया गया है, वह पश्चिम से पूर्णतया भिन्न है। अतीत को अनदेखा करना, परम्पराओं को तोड़ना, सभी बंधनों से मुक्त होकर व्यक्तिगत हित को ही महत्व देना वर्तमान आधुनिकता की नयी परिभाषा बनती जा रही है। हमारा समाज इस नवीन परिभाषा में पतनोन्मुख होता जा रहा है। जबकि आधुनिकता के अंतर्गत परम्पराभंजन, अतीत की अवहेलना जैसे विचारों का कोई समर्थन नहीं देखने को मिलता। फिर हम आधुनिकता के किस स्वरूप को ग्रहण कर रहे हैं। रघुवीर सहाय ने भी इस चिंता को अपने शब्दों में व्यक्त करते हुए लिखा है कि, "क्या वजह है कि पिछले कई वर्षों में जब से साहित्य में आधुनिकता और आधुनिक संवेदन की बात होने लगी। हम लोग कुंठा, यातना, वितृष्णा और विरक्ति और इससे आगे जाकर सर्वनाश की बात भी करते हैं और इन्हीं को आधुनिकता का प्रतीक मानते हैं।"

हमारा समाज व देश जिस स्वरूप को प्राप्त कर रहा है, उसका कारण पाश्चात्य संस्कृति व आधुनिकता को ही बताया जा रहा है। जिनके फलस्वरूप परम्परागत जीवन-मूल्यों के स्थान पर नवीन धारणाओं व परम्पराओं को विकसित किया गया। पाश्चात्य प्रभाव को दरकिनार करके अगर आधुनिकता की ही बात की जाए तो यह विचारधारा कभी भी मानव-विरोधी, परम्परा विरोधी प्रवृत्तियों को विकसित नहीं करती हैं। अज्ञेय ने लिखा है कि, "वे सारी विचारधाराएं आधुनिक कहीं जा सकती है जो किसी दूसरे व्यक्ति या वर्ग के शोषण, दमन और अवमानना का विरोध करती है और एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण अनिवार्य मानती है जिसमें मनुष्य मात्र की स्वतंत्र चेतना और सृजनशीलता का बहुमुखी विकास संभव हो।"

आधुनिकता वादी दृष्टिकोण 'मानवोत्थान' का ही समर्थन करती है। हमारे समाज में आधुनिकता को जिस गलत स्वरूप में आत्मसात् करके व्यक्ति हित साधना को ही महत्त्व दिया जा रहा है, वह सिर्फ मनुष्य की स्वार्थपरता ही है। मनुष्य की स्वार्थलिप्सा की अति ने ही विभिन्न प्रतिकूल परिस्थितियों के अन्तर्गत अपराधों को बढ़ाने में अहम् भूमिका का निर्वाह किया है। हमारा साहित्य समाज का हू-ब-हू चेहरा बताता है। समाज की यथार्थ परिस्थितियों से अवगत कराना साहित्य का परम कत्तव्य है। क्योंकि "साहित्य मानव समाज के विकास का परिणाम और प्रमाण भी है, मनुष्य की सामाजिक चेतना की उपज है और सामाजिक चेतना को उपजाने वाला भी।" इसीलिए वर्तमान समाज में जारी उथल-पुथल को तत्कालीन साहित्य के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जा रहा है। जिस प्रकार धर्मवीर भारती जी ने 'आधुनिकतावाद' को 'संकटबोध का घोषणा पत्र' कहकर परिभाषित किया था, ठीक उसी प्रकार यदि साहित्य की नवीनतम विधा लघुकथा को भी यथार्थ परिस्थितियों में विघटित होते जीवन मूल्यों को उद्घाटित करने वाली या 'संकट बोध की घोषणा' करने वाली कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। आज लघुकथाएं समाज में हो रहे मानवीय मूल्यों के विघटन के प्रति चिंता को व्यक्त करती है। आधुनिकता के नाम पर हो रहे अत्याचारों को लघुकथाओं में चित्रित किया गया है। सिर्फ नवनिर्मित सुख-सुविधाओं से घर भर लेना, भाषा में नयापन का दिखावा

करना, फैशन के अनुरूप वस्त्र धारण कर लेना आधुनिक होना नहीं है। जब तक मनुष्य की सोच पर पड़ा हुआ रूढ़ियों का भारी पत्थर नहीं हटेगा, वह आधुनिक नहीं होगा।

रामधारी सिंह दिनकर ने कहा कि, "जिसे हम आधुनिकता कहते हैं, वह एक प्रक्रिया का नाम है। यह प्रक्रिया अंधविश्वासों से बाहर निकलने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया नैतिकता में उदारता बरतने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया बुद्धिवादी बनने की प्रक्रिया है। आधुनिक वह है जो मनुष्य की ऊंचाई उसकी जाति या गोत्र से नहीं बल्कि उसके कर्म से नापता है। आधुनिक वह है जो मनुष्य-मनुष्य को समान समझे।"

बौद्धिक विकास के साथ ही समानता की भावना को महत्व दिया गया है, जबकि हमारे समाज में व्यक्ति के आर्थिक स्तर को ही महत्व दिया जा रहा है। हम आज भी दलितों के साथ छुआछूत का व्यवहार करते हैं, शादी के लिए कुंडली का मिलान करना, दहेज लेना, लड़की के जन्म पर दुःखी होना या उसे मार देना, लड़के-लड़की में भेदभाव करना, नारी को शोषण की दृष्टि से देखना और भी न जाने कितनी विसंगतियों से हमारा समाज आधुनिक समय में भरा पड़ा है, फिर भी हम अपने आपको आधुनिक सभ्यता का प्रतिनिधि मानते हैं। मनुष्य ने अपनी स्वार्थपरता के कारण उन्हीं तत्वों को अपने जीवन में ग्रहण किया है जो उसके निजी हितों की पूर्ति में सहायक हो। पाश्चात्य सभ्यता से भी आधुनिकता के नाम पर उन परम्पराओं की ग्रहणशीलता पर जोर दिया जा रहा है जो भारतीय संस्कृति व समाज के लिए मान्य नहीं हैं, जैसे कि उन्मुक्त सेक्स, लिव इन रिलेशनशिप, एकल परिवारों के प्रति लगाव, नशाखोरी आदि। इन सभी का असर हमारे समाज पर वर्तमान समय में देखा जा सकता है।

लघुकथाओं में मानवीय मूल्यों का विघटन

आधुनिक लघुकथाओं के अन्तर्गत हो रहे मानवीय मूल्य विघटन को अनेक रूपों में चित्रित किया गया है-

वीरेन्द्र नारायण झा की लघुकथा, 'शुक्रगुजारी' जिसमें वैज्ञानिक पद्धति के माध्यम से लिंग जांच करवायी जाती है, "आधुनिकता व अंध विश्वास का अनोखा रूप - पति और पत्नी दोनों कोख में पल रहे बच्चे के लिंग को लेकर काफी चिंतित थे। इस बार वे किसी तरह का जोखिम नहीं उठाना चाहते थे। डॉक्टरी जांच के बाद पाया गया कि कोख में दो जुड़वा बच्चे हैं। एक लड़का और दूसरी लड़की। उन्होंने भगवान को याद किया और आभार प्रकट किया। उधर, लड़की अपने भाई का तहेदिल से शुक्रिया अदा कर रही थी, जिसकी वजह से उसकी जान बच गई।" इस लघुकथा में अंधविश्वासों की पूर्ति के लिए आधुनिक तकनीक का प्रयोग किया गया हैं। इसमें मनुष्य का स्वार्थ ही सर्वोपरि हैं। अगर लिंग जांच में दोनों लडकियां होती तो शायद ही उन्हें जन्म दिया जाता।

इसी प्रकार प्राण शर्मा की 'इकलौती बेटी' लघुकथा आधुनिकता की आड़ में स्वार्थों की ही पूर्ति करती है -

"अमीरचंद की इकलौती बेटी पढ़-लिख कर अमेरिकन फर्म में अच्छा कमाने लगी है। उसकी अस्सी हजार रुपये महीने की तनख्वाह है। तीन सालों में ही अमीरचंद ने बेटी की आमदनी से रोहिणी में अच्छा फ्लेट खरीद लिया है। उसके घर की शान के क्या कहने अब। कपड़े-लत्तों से लेकर फर्नीचर तक सब-कुछ नया ही नया है।

देसी शराब की जगह विलायती शराब की बोतल खुलती है। खुशहाली से उनके पैर जमीन पर नहीं पड़ते हैं। बेटी के लिए कई रिश्ते आते हैं, लेकिन कोई न कोई बहाना कर अमीरचंद टाल जाते हैं। मां को बेटी की चिंता है लेकिन पति के सामने उसकी एक नहीं चलती। हर रोज सजल नेत्रों से कहती है, "देखिए बेटी की उम्र बढ़ रही है। छब्बीस की हो गयी है और कितना इंतजार करेंगे ? आप तो सुन्दर से सुन्दर लड़कों को ठुकरा रहे हैं ?" जवाब में अमीरचंद कहते हैं, "भाग्यवान, हो जाएगा उसका ब्याह, इतनी जल्दी भी क्या है। आजकल लड़कियाँ चालीस की उम्र हो जाने पर भी ब्याह शादी नहीं करती। जमाने के साथ चलना चाहिए। बेटी को कुछ साल और काम करने दो। हमारा घर कुछ तो भर जाये।"

इस लघुकथा के अन्तर्गत भी निजी स्वार्थों की पूर्ति के लिए आधुनिकता की दुहाई दी जा रही है। एक पिता के कर्तव्य को अर्थ के आगे टूटते हुए दिखाया गया है।

आधुनिकता की आड़ में अति बौद्धिकता व स्वार्थपरता का कठोर आवरण मनुष्य के कोमल हृदय के भावनात्मक पक्ष को ढ़कता जा रहा है। मनुष्य जीवन से संवेदनाएं विलुप्त होती जा रही है।

स्वयं के माता-पिता भी मनुष्य के लिए अजनबी हुए जा रहे हैं। पाश्चात्य रंग में रंगे युवा अपने वृद्व माता-पिता को अपने साथ रखने में भी शर्माते हैं, इससे उनका रूतबा बिगड़ता है, इसलिए घर बनाने के साथ ही सर्वेन्ट क्वार्टर भी बना लिये जाते हैं, जिनमें बुजुर्ग माता-पिता को रखा जाता है। कमल कपूर की लघुकथा 'सर्वेंट क्वार्टर' में माता-पिता की इसी सोच का मासूम बच्चे पर क्या प्रभाव पड़ता है, बताया गया है-

"ये क्या बना रहे हो मयंक ? बेटे को बड़े मनोयोग से पेंटिग बनाते देख पापा ने पूछा। "अपना घर बना रहा हूँ पापा। मैं बड़ा होकर यहाँ रहूंगा।"

"गुड! पर वो क्या बनाया है, घर से अलग-अलग सा ?"

"ये सर्वेंट क्वार्टर है, पापा।"

"ओ हो, तो बेटे जी सर्वेंट के लिए अलग घर बना रहे हैं" हंसते हुए कहा पापा ने।

"ये तो आपके लिए है पापा। जब आप बूढ़े हो जायेंगे तो यहाँ रहेंगे।"

"सर्वेंट क्वार्टर में रखोगे मुझे ?"

"और क्या ? दादाजी भी तो सर्वेंट क्वार्टर में ही रहते हैं न। आप ही तो कह रहे थे कि बूढ़ों के लिए सर्वेंट क्वार्टर ही ठीक रहता है। वह खांसी करके बहुत 'डिस्टर्ब' जो करते हैं।"

हम आज जिस तरह का व्यवहार अपने माता-पिता के साथ कर रहे हैं, वैसा ही व्यवहार हमारे साथ भी भविष्य में होगा। इसी संकटबोध को इस लघुकथा के माध्यम से व्यक्त किया गया है। बढ़ते वृद्धाश्रम चिंता का विषय है। बुजुर्ग हमारे घर-परिवार की नींव होते हैं, अगर नींव को ही खोखला कर दिया जायेगा तो परिवार रूपी इमारत को गिरने से कोई नहीं रोक सकता।

आज के युवा-वर्ग में मानवीय मूल्य तेजी से विघटितहो रहे हैं, वह अपने घर-परिवार से दूरी बढ़ाते जा रहे हैं। यह शोचनीय स्थिति की ओर संकेत करती है। माता-पिता से बढ़ती हुई दूरी को देव शर्मा की लघुकथा 'कब लगा था' में व्यक्त किया गया है। विदेश में रहने वाले पुत्र सिर्फ दिखावी औपचारिकता के लिए पिता से सम्बन्ध रखे हुए हैं। पिता की मृत्यु हो जाने पर जब उनके दाह-संस्कार के मध्य जोरदार धमाका होता है, जो उनके शरीर में प्रत्यारोपित पेस मेकर का

होता है, इसकी जानकारी तक उनके पुत्रों को नहीं होती। पुत्रों की पिता के प्रति संवेदनशीलता को ही फटते हुए दिखाया गया है। आधुनिक लघुकथाकार अपनी लघुकथाओं के माध्यम से इस मशीनी युग में यंत्र हुए मनुष्य पर प्रहार करता हुआ अपनी व्यथा प्रकट कर रहा है। जहाँ आधुनिकता के अन्तर्गत मानवोत्थान की बात कही गयी थी, वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए वह कहीं नजर नहीं आती। आज का यंत्र मनुष्य संवेदनाशून्य होकर गला काट प्रतिस्पर्धा का शिकार होता जा रहा है, जिसमें घर के सदस्यों को भी नहीं छोड़ा गया है। पति-पत्नी, भाई-बहन, माता-पिता, पुत्र-पुत्री सभी रिश्ते स्वार्थ के आवरण में ही लिपटे नजर आते हैं। अपने स्वार्थों आवरण को छिपाने के लिए उस पर आधुनिकता का लबादा डाल दिया जाता है। यह कैसी मानसिकता है। आज जब हमारे पास अनेक तकनीक हैं, विज्ञान के द्वारा जीवन को सरल बनाने के अनेक उपकरणों का आविष्कार किया गया है, फिर भी क्यों मनुष्य स्वार्थों में अंधा होकर इन सबका दुरूपयोग करने में लगा है। शिक्षा को अच्छे कार्यों में प्रयुक्त न करके गलत कार्यों को अंजाम देने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। मनुष्य का मानसिक संतुलत क्षत-विक्षत होने लगा है। मनुष्य को अपनी परम्पराओं व अतीत के गौरव को भी नहीं भुलाना चाहिए। आधुनिकता की इमारत भी अतीत की सुदृढ़ नींव पर टिकी हुई है। परम्पराओं की अवहेलना में ही मनुष्य जीवन विभिन्न मानसिक यंत्रणाओं का शिकार हो रहा है। मानव जाति के भविष्य के लिए यह कदापि भी उचित नहीं है। भारतीय संस्कृति का निर्वाह करने वालों के लिए तो बिल्कुल भी नहीं। हम भावी पीढ़ी को विरासत में क्या देंगे ? पश्चिमी संस्कृति यह सोचने का विषय है, जिनका चित्रण जागरूक लघुकथाकारों द्वारा बार-बार किया जा रहा है। हमारे देश में आज भी गरीबी, भूखमरी, अशिक्षा, बेरोजगारी की समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है। सम्पत्ति के असंतुलित वितरण में अमीर अधिक अमीर और गरीब अधिक गरीब होता जा रहा है। सम्पत्ति ही स्वार्थी मनोवृत्ति को विकसित करती है। सम्पत्ति के बंटवारे में ही संयुक्त परिवार टूट रहे है, पति-पत्नी का दाम्पत्य जीवन बिखर रहा है, बच्चों से अलगाव की स्थिति उत्पन्न हुई है तथा वृद्धों की दयनीय स्थिति का कारण भी सम्पति ही है। अर्थ के बढ़ते हुए वैभव में इंसान-इंसान की गरिमा भूलता जा रहा है। बड़े-बड़े रईस लोग भी अपने माता-पिता को वृद्धाश्रम में डाल देते हैं और तकनीकी विकास द्वारा इंसान, इंसान के नजदीक होने की दलीलें भी देते हैं। खेमकरण सोमन की लघुकथा 'विश्वग्राम' में इसी मानसिकता को उजागर किया गया है - "सही कहा आपने देश यहां भले ही सैंकड़ों हो लेकिन आज के समय में सभी देश एक-दूसरे के टच में हैं। पूरी दुनिया विश्वग्राम में तब्दील हो चुकी है। 'नई-नई तकनीकियां आ गई हैं। टीवी मोबाईल, इन्टरनेट और उपग्रह आदि इन प्रौद्योगिकी संजालों ने तो आदमी को आदमी के और भी करीब ला दिया है।

'क्या बात कहीं आपने। यकीनन आज का आदमी अपने परिवार से ज्यादा करीब है। वह दूर रहकर भी अपने परिवार, सगे-सम्बन्धियों को एक सूत्र में पिरोये हुए है।

'काफी देर हो गयी - एक साहब ने कहा- 'देश दुनिया, तकनीकी पर बातचीत करते हुए अब हमें अपने-अपने पिताजी से मिल लेना चाहिए।'

'जी हाँ, बिल्कुल-बिल्कुल! दूसरे साहब ने कहा - 'आईए चलते हैं।' दोनों साहब थोड़ी दूरी पर स्थित वृद्धाश्रम की ओर बढ़ चले।'

क्या परिवार में माता-पिता से रिश्ता सिर्फ तकनीक के सहारे ही जिंदा रह गया है। जो सुकून घर-परिवार के सदस्यों के बीच रहकर मिलता है, क्या वह वृद्धाश्रम में मिल सकता है ? नहीं! मनुष्य का भावनात्मक पक्ष तकनीकों के घने जाल में उलझता हुआ प्रतीत हो रहा है। देश से देश का जुड़ाव या सम्पर्क तकनीक पर आधारित हो सकता है, लेकिन मनुष्य से मनुष्य का जुड़ाव व लगाव भावनात्मकता पर ही निर्भर है।

मानव जीवन के हर क्षेत्र में मानव मूल्यों के ह्रास को देखा जा सकता है। पति-पत्नी का पवित्र रिश्ता भी स्वार्थों से ग्रस्त हो गया है। नौकरीपेशा पति-पत्नी प्रमोशन के लिए एक-दूसरे का इस्तेमाल करते हैं, यह दाम्पत्य जीवन में हो रहे विघटन को ही व्यक्त करता है।

लक्ष्मीनारायण वशिष्ठ की लघुकथा 'शिकंजा' में पति द्वारा अपने प्रमोशन के लिए पत्नी का इस्तेमाल किया जा रहा है तथा पत्नी भी उसे चैलेंज की तरह स्वीकार करती है-

"देखना डार्लिंग ! शिकंजा काफी मजबूत रखना। बस, हाथ-पांव फड़फड़ाता रहे साला। मेरा प्रमोशन इसी खूसट के साईनों से होगा।" सक्सैना ने उनका हाथ तथा अपनी आंख दबाते हुए धीरे से कहा।

"चिंता मत करो डियर! यहां से दिल्ली दो सौ किलोमीटर है। इसके प्राण ही शेष रहेंगे, शेष सब कुछ मेरे शिकंजे में होगा। जब सावित्री ने यमराज से सत्यवान के प्राण वापिस ले लिये थे तब यह तो ....। मेरा सौन्दर्य कामदेव को भी साइन करने पर मजबूर कर सकता है। तुम तो यह समझ लो कि तुम्हारा प्रमोशन हो गया और दिल्ली में ही हो गया।"

यह वर्तमान समय में दाम्पत्य जीवन की बदली हुई तस्वीर है। इसी तरह शिक्षा के क्षेत्र में मेहनत के मायने ही बदल गए हैं जिसे ज्ञानदेव मुकेश ने अपनी लघुकथा 'मेहनत करने वाले में' चित्रित किया है -

एक पिता ने बेटे ने कहा "बेटे, यह नौकरी पानी है तो तुझे कड़ी मेहनत करनी होगी। वैसे तुम मेहनत के मायने समझते हो न ? बेटे ने कहा, 'नहीं पिताजी।'

पिता ने कहा, 'चोरी करनी होगी। सभी प्रश्नों का हल लिख सको इसके लिए सभी तरह के चुटके तैयार करने होंगे। यह काम बड़ी मुस्तैदी और होशियारी से करना होगा। तभी सफलता मिलेगी।"

आधुनिक समय की शिक्षा यह नहीं सिखाती है। सफलता के लिए गलत तरीकों का प्रयोग निजी स्वार्थों की ही देन कहा जा सकता है। आज के तकनीकी विकास में भी शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है।

मन के पवित्र भावों पर अर्थ के कुठाराघात को डॉ.प्रमोद कुमार 'बेअसर' की लघुकथा 'स्टैण्डर्ड' में व्यक्त किया गया है-धनाढ्य मित्र की प्रतिक्रिया-

"अबे यार ..... यही तेरी सोसायटी का स्टैण्डर्ड है..... बधाई संदेश.... वह भी पंद्रह नये पैसे के पोस्टकार्ड पर ..... मेरे घर आना, मैं तुझे दिखलाऊंगा कि मेरे पास कितने महंगे और सुन्दर-सुन्दर ग्रीटिंग कार्ड नववर्ष की बधाई स्वरूप आए हैं ?"

"हृदय की पवित्र भावनाओं का प्रकटीकरण का मापदंड क्या पैसा ही होता है ?"

आधुनिक समय में ऐसी ही मानसिकता फल-फूल रही है। किसी का किसी के साथ आत्मीय

E ISSN 2320 – 0871
17 जुलाई 2017

सम्बन्ध दिखावे के आधार पर ही रह गया है। हर रिश्ते में भी कहीं न कहीं कोई स्वार्थ निहित रहता है। भावों की मिठास और गरमाहट का कहीं कोई नामों-निशान नज़र नहीं आता है। इसी दिखावी प्रवृति को मनोज अबोध ने अपनी लघुकथा 'स्टेट्स सिंबल' में व्यक्त किया है-

"सिन्हा सा'ब..... आपकी परेशानी मैं समझता हूँ ..... मगर आप इन पैसे वालों की सोच को नहीं समझते.... ऐसा नहीं कि ये गारबैज बैग नहीं खरीद सकते.... बल्कि सच तो यह है कि ये जानबूझकर कचरा खुला डालते हैं.... इनका कचरा भी इनका 'स्टेट्स सिंबल' होता है... ओ केलकटा, बरकोस, केएफसी के पैकिंग, टीचर स्काच के डब्बे.... पिजा हट और खान चचा के रैपर .... ताकि पड़ौसी देख सके और उनकी रईसी का अंदाजा लगा सके कि पिछली रात किस मंहगे रेस्टोरेंट का खाना खाया या कौन-सी महंगी शराब उन्होंने पी है .... बस्स.....।"

आधुनिकता के दिखावे में गंदगी फैलाकर दूसरों को परेशान करना नकारात्मक सोच को ही प्रदर्शित करता है। वर्तमान समय की बदली हुई परिस्थितियों को देखते हुए 'दसवें दशक की कहानी' के अन्तर्गत लेखक द्वारा कहा गया है कि, "मनुष्यता की जगह स्वार्थपरता, जटिलता, विवेकशून्यता और हृदयहीनता जैसी विकृतियों ने अपना डेरा डाल दिया है और वह मानवीय सम्बन्धों की ऊष्मा पूरी तरह खो बैठा है। यह स्थिति आज की भौतिकता और यांत्रिकता के कारण पैदा हुई है। आदमी जीवधारी की जगह मशीन हो गया है। जिसमें न संवेदना रह गयी है, न मनुष्यता। ऐसी स्थिति में उसके लिए पिता, माता, भाई-बहन और पति-पत्नी के रिश्ते नगण्य रह गये और उसमें शेष रह गयी है एकमात्र स्वार्थ लिप्सा, वह नितांत वैयक्तिक हो गया है।"

निःसंदेह इन पंक्तियों के आधार पर यही कहा जा सकता है कि मनुष्य अपने स्वार्थों के घेरे में ही घुसता चला जा रहा है, जहाँ सभी रिश्ते-नाते नाममात्र के रह गये हैं। मनुष्य की संवेदनशून्यता का कारण आधुनिकता व वैज्ञानिकता को बताया जा रहा है, तो विज्ञान की प्रगति यह सिखाती है कि पारिवारिक रिश्तों को तोड़ लो, माता-पिता के प्रति जिम्मेदारियों का निर्वाह मत करो, अपराधों को बढ़ावा दो, बलात्कार जैसी कुत्सित घटनाओं को अंजाम दो आदि।

यह मनुष्य की स्वार्थी प्रवृति, निम्न सोच व संस्कारों की कमी है। मनुष्य की कम समय में अधिक पा लेने की मानसिकता ने ही इस तरह का वातावरण निर्मित किया है। संस्कारविहीन व अतिवादी मनुष्य से ऐसी ही आशा की जा सकती है। सुकेश साहनी की लघुकथा 'यम के वंशज' हृदयहीनता की मिसाल कही जा सकती है। इस लघुकथा के अन्तर्गत अस्पतालों के बदलते स्वरूप में आम आदमी की कथा को व्यक्त करने की कोशिश की गई है। अत्याधुनिक मशीनों के निर्माण, उच्च शिक्षा प्राप्त डाक्टरों के होने के बाद भी आम आदमी को लापरवाही से मरने के लिए छोड़ दिया जाता है, क्योंकि वह गरीब है और उससे उन्हें किसी तरह का लाभ प्राप्त नहीं होगा। क्या आधुनिकता यह सिखाती है ? लघुकथा का अंत तो बहुत ही मर्मस्पर्शी हो जाता है, जब अस्पताल की लापरवाहियों से अनजान ग्रामीण युवक को साईन के लिए बुलाया जाता है। उस कागज में लिखा होता है - "मैं अपनी मृत पत्नी व बच्चे की लाश लिए जा रहा हूँ। अस्पताल में की गई चिकित्सा से मैं संतुष्ट हूँ। मुझे यहां के किसी कर्मचारी से कोई शिकायत नहीं है।"

यहां अस्पताल में कार्यरत डाक्टर से लेकर वार्ड बाय तक कि हृदय शून्यता व स्वार्थी प्रवृत्ति को ही देखा जा सकता है। इंसान की संवेदनहीनता बहुत ही मार्मिक ढंग से व्यक्त की गई हैं। आधुनिक समय में जबकि पति-पत्नी दोनों नौकरी पेशा होते हैं या कमाने के सिलसिले में विदेश में रहते हैं तो उनके मासूम बच्चे की भावनाओं के साथ बहुत खिलवाड़ होता है। उन्हें या तो डे-केयर सेंटर में डाल दिया जाता है या प्ले स्कूल मे भेज दिया जाता है। अगर बच्चे घर में रहते हैं तो उन्हें नौकरों के भरोसे छोड़ दिया जाता है। दूसरों पर अंधे विश्वास का हर्जाना मासूम बच्चों को कई प्रकार की यातनाएं सहन करके चुकाना पड़ता है। एक मासूम बच्ची अपनी मां से ऐसी ही भावनाएं व्यक्त कर रही है- 'कौन ज्यादा कीमती'

"एक बहुत छोटी-सी बच्ची ने अपनी मम्मी से पूछा - "क्या आप कभी अपना रुपयों से भरा पर्स नौकरानी के पास छोड़ सकती है ?"

मम्मी ने लिपिस्टिक लगाते हुए बोला- पर्स और नौकरानी के पास! बिल्कुल नहीं।

मतलब ही नहीं।

सवाल ही नहीं।

फिर बच्ची ने बहुत ही मासुमियत से पूछा, फिर 'मुझे नौकरानी के पास कैसे छोड़कर पार्टियों में जा सकती हो ?"

अपनी बच्ची से ज्यादा महत्त्व रुपयों को देना मां की ममता के विघटित होते रूप को ही दर्शाता है। निःसंदेह ऐसी परिस्थितियां वर्तमान समाज में उत्तरोत्तर बढ़ती ही जा रही है। मासूम बच्चे अकेलेपन, अपराध प्रवृति व नशा जैसी आदतों के शिकार हो रहे हैं। जिसका मुख्य कारण माता-पिता का उपेक्षापूर्ण व्यवहार ही हैं। संस्कारों के नाम पर बच्चों को सिर्फ और सिर्फ पाश्चात्य संस्कृति व अंग्रेजी को ही सिखाया जा रहा है। बच्चे माता-पिता के प्रेमपूर्वक व्यवहार की जगह शिक्षा के लिए दिये जा रहे दबाव में जी रहे हैं। भविष्य के लिए चिंतित माता-पिता द्वारा यह भूल की जाती है कि अभी भविष्य नहीं वर्तमान को सुरक्षित रखना।

निष्कर्ष

उपर्युक्त लघुकथाओं के अध्ययन से यही निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि आधुनिकता द्वारा स्वस्थ्य व भावनाओं से निर्मित समाज का निर्माण करना चाहिए। आधुनिकता के नाम पर निजी स्वार्थों की पूर्ति के लिए भावनाओं से जुड़े रिश्तों की अनदेखी नहीं करनी चाहिए। अत्याधुनिक तकनीक से निर्मित उपकरणों का प्रयोग सही कार्य के लिए किया जाना चाहिए। मोबाईल व नेट चेटिंग के चक्कर में पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ना उचित नहीं है। अज्ञेय के अनुसार आधुनिकता और भारतीयता में कोई बुनियादी विरोध नही हैं। आधुनिक होने का अर्थ यह नही है कि हम भारतीय बिल्कुल न रहे और पश्चिम की नकल करें। हम विश्व और भारत में बदल रही परिस्थिति को पहचानें, तटस्थ होकर सही स्थिति की छाप ग्रहण करें, मिटे नहीं, नये संस्कारी हों। अगर यह नही होता तो हम आधुनिक नही हैं।" वर्तमान में मानवीय मूल्यों के विघटन के लिए जिम्मेदार कारकों को लघुकथाकारों ने अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 शिव कुमार मित्र, आलोचना के प्रगतिशील आयाम, पृष्ठ 59

2 अज्ञेय द्वारा सम्पादित सर्जन और सम्प्रेषण, पृष्ठ 33

3 अज्ञेय का कथापक्ष - डॉ. राकेश कुमार, पृष्ठ 15

4 रामदरश मिश्र की कहानियों में यथार्थ चेतना और मूल्य बोध, डॉ.राधेश्याम सारस्वत, पृष्ठ 43
5 धर्मवीर भारती, आधुनिकता अर्थात् संकट का बोध, शिक्षायतन कालेज में पढ़ा गया एक पत्र, नवम्बर 1959
6 रामधारी सिंह दिनकर, आधुनिकता बोध, पृष्ठ 24
7 रचना संसार डॉट कॉम लघुकथा, वीरेन्द्र नारायण झा की लघुकथाएं, सितम्बर 2007
8 प्रवासी दुनिया डॉट कॉम लघुकथा, प्राण शर्मा
9 आधुनिक हिन्दी लघुकथाएं, त्रिलोक सिंह ठकुरेला, पृष्ठ 67
10 थाली कैसे बजेगी, देव शर्मा, पृष्ठ 68
11 कथाक्रम / अक्टूबर-दिसम्बर, 2013 / पृष्ठ 69
12 सारिका, 30 नवम्बर, 85 पृष्ठ 23
13 कथाक्रम, जुलाई-सितम्बर 2011, पृष्ठ 48
14 बीसवीं सदी की चर्चित हिन्दी लघुकथाएं, जगदीश कश्यप, पृष्ठ 149
15 कथाक्रम/जनवरी-मार्च, 2014, पृ. 44
16 दसवें दशक की कहानी, डॉ.बनवीर प्रसाद शर्मा, डॉ. कृष्णकान्ता भारद्वाज, पृष्ठ 20
17 कथादेश, सं. सतीश राज पुष्करणा, पृष्ठ 539
18 इंटरने, जैन उज्जैन, प्रेरक लघुकथा संग्रह, फरवरी 5, 2014
19 विजयेन्द्र स्नातक : स्मृति शेष, मेरे समकालीन, पृष्ठ 92